[A-4] Seat No.: _____ No. of printed pages: 2

SARDAR PATEL UNIVERSITY
MA (Previous) (External) Examination
Tuesday, 26th April, 2016
10.30 am - 1.30 pm
HIN-402 - Hindi Paper II
आधुनिक हिन्दी काव्य

कुल गुण : १००

प्र.१ मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । (२०)

अथवा

प्र.१ 'कामायनी' के प्रथम सर्ग का भावार्थ अपने शब्दों में लिखें ।

प्र.२ निराला कृत 'तुलसीदास' काव्य की समीक्षा कीजिए । (२०)

अथवा

प्र.२ सुमित्रानंदन पंत की कविताओं के काव्य सौन्दर्य की चर्चा कीजिए ।

प्र.३ 'अँधेरे में' काव्य के कथ्य पर प्रकाश डालिए । (२०)

अथवा

प्र.३ आधुनिक हिन्दी कविता में नागार्जुन का स्थान एवं महत्त्व की चर्चा करें ।

प्र.४ टिप्पणी लिखें (**किन्हीं दो**) (२०)

१. साकेत के नवम् सर्ग का सार
२. 'अँधेरे में' काव्य का शिल्प
३. श्रद्धा का चरित्र चित्रण
४. 'खुरदरे पैर' कविता की मूल संवेदना

प्र.५ संदर्भ सहित व्याख्या लिखें । (२०)

(क) कहती मैं, चातकि, फिर बोल,
ये खारी आँसू की बूँदे दे सकती यदि मोल !
कर सकते हैं क्या मोती भी उन बोलों की तोल ?
फिर भी फिर भी इस झाड़ी के झुरमुट में रस घोल ।
श्रुति-पुट लेकर पूर्वस्मृतियाँ खड़ी यहाँ पट खोल,
देख, आप ही अरुण हुए हैं उनके पाण्डु कपोल !
जाग उठे हैं मेरे सौ सौ स्वप्न स्वयं हिल-डोल,
और सन्न हो रहे, सो रहे, ये भूगोल-खगोल ।

न कर वेदना-सुख से वंचित, बढ़ा हृदय-हिन्दोल,
जो तेरे सुर में सो मेरे उर में कल-कल्लोल !
चातकि, मुझको आज ही हुआ भाव का भान ।
हा ! वह तेरा रुदन था, मैं समझी थी गान !

अथवा

(क) जो नहीं हो सके पूर्ण-काम
मैं उनको करता हूँ प्रणाम ।
कुछ कुंठित औं कुछ लक्ष्य-भ्रष्ट
जिनके अभिमंत्रित तीर हुए;
रण की समाप्ति के पहले ही
जो वीर रिक्त तूणीर हुए !
– उनको प्रणाम !
जो छोटी-सी नैया लेकर
उतरे करने को उदधि-पार;
मन की मन में ही रही, स्वयं
हो गए उसी में निराकार !
– उनको प्रणाम !

(ख) किंतु, वह फटे हुए वस्त्र क्यों पहने है ?
उसका स्वर्ण-वर्ण मुख मैला क्यों ?
वक्ष पर इतना बड़ा घाव कैसे हो गया ?
उसने कारावास-दुःख झेला क्यों ?
उसकी इतनी भयानक स्थिति क्यों है ?
रोटी उसे कौन पहुँचाता है ?
कौन पानी देता है ?
फिर भी, उसके मुख पर स्मित क्यों है ?
प्रचंड शक्तिमान क्यों दिखाई देता है ?

अथवा

(ख) स्वर्ण, सुख, श्री सौरभ के भोर
विश्व को देती है जब बोर,
विहग कुल की कल-कण्ठ हिलोर
मिला देती भू-नभ के छोर;
न जाने, अलस पलक दल कौन
खोल देता तब मेरे मौन !

☺☺☺☺☺